In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हि.२३३

३२

दक्षिण की काशी

१२३२

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला १५५

दक्षिण की काशी

कोल्हापुर तीर्थ का परिचय

लेखक
श्रीपाद जोशी

सम्पादक
यशपाल जैन

पुस्तक सेट के लिनिष है

१९६२
सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९६२
मूल्य
४० सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हीरा आर्ट प्रेस
दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बहुत सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

पाठकों से

इस माला में हमने अपने देश के बहुत-से तीर्थों का परिचय दिया है। इस पुस्तक में हम दक्षिण के एक ऐसे तीर्थ की जानकारी करा रहे हैं, जिसकी दक्षिण में ही नहीं, सारे भारत में बड़ी मानता है।

हमारे देश का कोई भी भाग ऐसा नहीं है, जहां तीर्थ न हों। सबसे विचित्र बात यह है कि उत्तर भारत के तीर्थों से दक्षिण भारत ने प्रेरणा ली है और दक्षिण भारत के तीर्थों से उत्तर भारत ने। यही कारण है कि उत्तर और दक्षिण के तीर्थों में बहुत-सी चीजें एक-सी मिलती हैं।

दक्षिण का कोल्हापुर तीर्थ उत्तर की काशी जैसा महत्व रखता है। इसलिए उसे 'दक्षिण की काशी' नाम दिया गया है।

इस पुस्तक में इसी तीर्थ का विस्तृत परिचय दिया गया है। हम आशा करते हैं कि इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों का ज्ञान बढ़ेगा और धर्म के प्रति आस्था।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दक्षिण की काशी

काशी का महत्व

काशी हमारे देश का बहुत बड़ा तीरथ है। हर हिन्दू की इच्छा होती है कि जीवन में कम-से-कम एक बार तो वह काशी हो ही आवे। मराठी में एक कहावत है, 'काशीस जावें नित्य वदावें,' यानी हम हमेशा यह मंत्र जपते रहें कि काशी जाना चाहिए, जिससे हम काशी न भी जा सकें तो भी उसकी याद रहने से उतना पुण्य तो मिल ही जाता है। यह भी हो सकता है कि लगातार उसीका ध्यान करते रहने से हम किसी दिन सचमुच ही काशी चले जायं। जो हो, हर हिन्दू के मन में काशी के लिए बड़ी श्रद्धा होती है। इसीलिए जो लोग दूरी के कारण काशी नहीं जा सकते, वे अपने आस-पास ही कहीं एक क्षेत्र खोज निकालते हैं और उसे अपने यहां की काशी मान लेते हैं। दक्षिण भारत में यह बात विशेष रूप से पाई जाती है। वहां दक्षिण की काशी कहलानेवाले कई क्षेत्र आज भी मौजूद हैं।

ऐसा ही एक महान् क्षेत्र है करवीर, जिसे कोल्हा-

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पुर भी कहा जाता है। महाराष्ट्र के लोगों के मन में कोल्हापुर का महत्व कई कारणों से बहुत अधिक है। छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशजों का राज यहां पर अभी-अभी तक चल रहा था, इसलिए लोगों के मन में कोल्हापुर राज्य के विषय में बड़ी श्रद्धा रही है। कोल्हापुर के भूतपूर्व छत्रपति स्वर्गीय श्री शाहू महाराज ने महाराष्ट्र की साधारण जनता को ऊपर उठाने के लिए बहुत प्रयत्न किया था और उसके लिए शिक्षा के कई साधन जुटाये थे। इसलिए भी महाराष्ट्र की आम जनता कोल्हापुर की ऋणी है। जात-पांत और छुआछूत के भेद-भावों को मिटाने में भी कोल्हापुर के महाराजाओं और जन-नेताओं का बड़ा भाग रहा है।

महालक्ष्मी की मूर्ति, अलंकारों के साथ

लेकिन मराठीभाषी जनता के लिए ही नहीं, बल्कि आन्ध्र और कर्नाटक की जनता के लिए भी कोल्हापुर का जो महत्व है, उसका कारण वहां की जगदम्बा अम्बाबाई है। इस महालक्ष्मी जगदम्बा के दर्शनों के लिए आज भी हर साल हजारों-लाखों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यात्री कोल्हापुर जाते रहते हैं।

दक्षिण की काशी

कोल्हापुर शहर बंबई-बंगलोर-मार्ग पर पूना से बस के रास्ते १४६ मील है। पक्की कोलतार की सड़क होने के कारण पूना से छः घन्टे के अन्दर सरकारी बस आराम से कोल्हापुर पहुंचा देती है। इस रास्ते में सातारा, कराड, आदि ऐतिहासिक और व्यापारिक महत्व के शहर आते हैं। भारत का एक बड़ा बांध 'कोयना बांध' कराड के पास ही बन रहा है। इस बांध के बन जाने पर इस इलाके को काफ़ी बिजली मिल जायगी।

रेल के रास्ते भी पूना से कोल्हापुर जाया जा सकता है। पूना से बंगलोर जानेवाली रेल के रास्ते पर पूना से १६० मील पर मिरज स्टेशन आता है। वहां से कोल्हापुर लगभग तीस मील है। रात को पूना से चलनेवाली गाड़ी सुबह कोल्हापुर पहुंचा देती है।

नाम कैसे पड़ा ?

कोल्हापुर शहर छः मील लम्बा और पांच मील चौड़ा है। ऐसा लगता है, यह शहर कटोरी की तरह एक बड़े गढ़े में बसा हुआ है। कुछ लोगों का विचार है कि द्राविड़ भाषा के 'कोल्ल' अर्थात् दर्रा या घाटी शब्द पर से 'कोल्लापुर' और उसपर से कोल्हापुर

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

शब्द बना है।

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि 'कोल' नाम के जो आदिवासी यहां रहते थे, उन्हें आर्यों ने यहां से भगा दिया और वे स्वयं यहां बस गये। इन कोलों को असुर करार दिया गया और कोलासुर का नाश करने के लिए महालक्ष्मी ने यहां अवतार लिया। इसलिए यह शहर कोल्हापुर कहलाया।

कुछ लोगों का कहना है कि यहांपर कई तालाब थे, जिनमें हमेशा कमल खिले रहते थे। कमला के लिए कन्नड भाषा में 'कोलिहु' शब्द आता है। उस-पर से 'कमलों का शहर' कोल्हापुर बन गया।

'देवी भागवत' में कोल्हापुर की चर्चा इस तरह आती है :

कोलापुरं महास्थानं यत्र लक्ष्मीः सदा स्थिता।

—श्री देवी बोलीं कि जिस जगह लक्ष्मी का निवास सदा होता है वह कोल्हापुर मेरा महास्थान है।

(देवी भागवत, स्कंद ७, अ० ३८)

'करवीर माहात्म्य' में कहा गया है कि कोलासुर और उसका बेटा करवीर जब जनता को बहुत सताने लगे तो जगज्जननी जगदम्बा ने यहां आकर उनका नाश किया। तबसे इस शहर का नाम कोल्हापुर या करवीर पड़ गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि जगदम्बा महालक्ष्मी ने अपने 'कर' यानी हाथ से इस शहर को प्रलय-काल के गढ़ें में से ऊपर उठाया था, इसलिए इसे करवीर कहा जाने लगा।

जो हो, आज भी ये दोनों नाम चल रहे हैं। इधर कुछ दिनों से कोल्हापुर शहर के लिए कोल्हापुर और तहसील के लिए करवीर शब्द इस्तेमाल किया जाने लगा है।

बहुत पुराना शहर

कोल्हापुर शहर में पंच गंगा नदी के किनारे ब्रह्मपुरी नाम की एक बस्ती है। यह बस्ती एक पहाड़ी पर है। कुछ साल पहले इस पहाड़ी की खुदाई की गई तो उसमें ईसा से पहले तीसरी सदी के बर्तन, गहने, सिक्के आदि पाये गए। इन चीजों की मदद से पुरातत्त्व के जानकारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि बाईस सौ साल पहले यहांपर एक शानदार शहर था, जिसका सम्बन्ध सीधे इटली देश के रोम शहर के साथ था, और यहां के लोग यूरोप के दूसरे देशों के साथ भी व्यापार करते थे। मजे की बात यह है कि ये लोग आर्य नहीं, बल्कि यहां के आदिवासी थे और उनके देवता का मन्दिर आज भी यहां मौजूद है, जिसे वे 'स्थलोबा' या 'स्थल देवता' कहते हैं। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

देवता को माननेवाले हरिजनों की बस्ती भी पास ही है। यहां की बस्ती किसने बसाई, इसका किसीको पता नहीं था, इसलिए लोग मानते थे कि स्वयं ब्रह्मा ने ही उसे बसाया था। इसीसे उसका नाम 'ब्रह्मपुरी' पड़ गया था।

आगे चलकर यहां कई राजाओं ने राज किया, जिनके सिक्के यहां मिले हैं। अठारहवीं सदी के शुरू में मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब मराठों को कुचल डालने के इरादे से जब महाराष्ट्र में दौड़-धूप कर रहा था, तब उसने अपना डेरा ब्रह्मपुरी में लगाया था। उस ज़माने की एक दरगाह यहां मौजूद है। उसके बाद अंग्रेज़ों के जमाने में ईसाई मिशनरियों ने यहां अपना अड्डा जमाया और एक गिरजाघर भी खड़ा किया। इस तरह दो हज़ार से भी अधिक बरसों का इतिहास इस शहर की बुनियाद में छिपा पड़ा है।

छत्रपति की राजधानी

छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद उनके छोटे बेटे राजाराम की पत्नी महारानी ताराबाई ने अपने पति छत्रपति राजाराम महाराज के मरने के बाद सन् १७०० ईसवी में अपने पुत्र शिवाजी (दूसरे) के नाम से कोल्हापुर में अपना अलग राज स्थापित किया। पहले कई साल तक इस राज की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राजधानी कोल्हापुर से बारह मील दूर पन्हाला नाम के किले पर रही। बाद में सन् १७८२ ईसवी में इस राज की राजधानी कोल्हापुर हुई। तबसे उसका महत्व बढ़ता गया। यहां के राजा अंग्रेज़ों के दोस्त थे, मगर यहां के एक राजा शिवाजी (चौथे) के भाई चिमा-साहब ने सन् १८५७ के स्वतंत्रता-युद्ध में ज़ोरदार भाग लिया था, जिसके कारण उन्हें अंग्रेज़ों का कैदी बनकर कराची जाना पड़ा और वहीं वह शहीद हो गये।

महालक्ष्मी का भव्य मन्दिर

यह तो हुआ इस शहर का ऐतिहासिक महत्व, परन्तु इसका असली महत्व धार्मिक है। यहां आदि माया महालक्ष्मी का जो मन्दिर है, उसीके कारण इसे पुराने ज़माने से आज तक इतना महत्व प्राप्त हुआ है।

यह मन्दिर द्राविड़ ढंग का है। इसका पत्थर काला और मजबूत है। इसमें लकड़ी का प्रयोग बिलकुल नहीं किया गया है; इसलिए पिछले डेढ़ हज़ार बरसों में धूप और बारिश का कुछ भी असर उसपर नहीं हुआ है। मन्दिर की लम्बाई पूर्व-पश्चिम में दो सौ फुट और दक्षिण-उत्तर में चौड़ाई डेढ़ सौ फुट है। मूल मन्दिर तीस फुट ऊंचा था। उसपर संकेश्वर मठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

के श्री शंकराचार्य ने अठारहवीं सदी में नया शिखर बनवाया, जिसकी ऊंचाई पैंसठ फुट है। इसके अन्दर

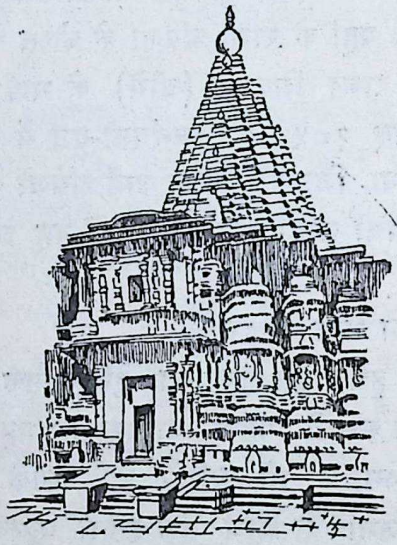

महालक्ष्मी का भव्य मन्दिर

प्रवेश करने के लिए चारों दिशाओं में एक-एक बड़ा दरवाजा है। पश्चिम की तरफ का दरवाजा बड़ा ही आलीशान और मजबूत है, जिसे महाद्वार कहते हैं। वहांतक पहुंचने के लिए कुछ सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं और फिर कुछ सीढ़ियां उतरकर हम मन्दिर के आंगन में पहुंच जाते हैं।

आंगन में बाइ ओर एक चबूतरे पर पत्थर के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कुछ दीप-स्तंभ हैं, जिन्हें दीपमालाएं कहते हैं। नवरात्रि के दिनों में और आश्विन की पूर्णमासी को रात में इन दीप-स्तंभों पर जब दीये जलाये जाते हैं तब वह दृश्य बड़ा ही मनोहारी दीखता है।

बाहर से देखने पर इस मन्दिर का आकार सितारे जैसा दिखाई देता है। इस ढंग के शिल्प को सर्वतोभद्र शिल्प कहा जाता है। इसकी पत्थर की संगीन दीवारों में चौकोर पत्थर के खंभे हैं, जिनपर बेल-बूटे और तरह-तरह की नक्काशी की गई है। इन दीवारों पर पुराणों में कही गई कहानियां भी खोदी गई हैं। चौकोर खंभों पर चौंसठ योगिनियां हैं, जो भरत के नाट्य-

चौंसठ योगिनियों में से एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

शास्त्र में वर्णित नृत्य की भूमिका में हैं। नाच करनेवाली इन देवियों को देखकर आज भी कलाकार चकित होते हैं। उनकी मोहकता, कोमलता और सजीवता देखते ही बनती है।

महालक्ष्मी के इस मन्दिर के अहाते में कई छोटे-बड़े मन्दिर हैं, जिनमें विट्ठल, सत्यनारायण, गौरी-शंकर, काशी विश्वेश्वर, केदारलिंग, कुंडलेश्वर, सिद्धेश्वर, शाकंबरी, मुक्तेश्वरी, हरिहरेश्वर, दत्तात्रेय, शेषशायी, नवग्रह आदि देवताओं के मन्दिर प्रमुख हैं। काशी की तरह यहां भी एक 'मणिकर्णिका' तीर्थ है। नवग्रहों के मन्दिर के मंडप के खंभों और छत में चालुक्यों के जमाने की सुन्दर कारीगरी है। उस दृष्टि से यह छोटा मन्दिर भी देखने योग्य है। शेष-शायी भगवान् का मन्दिर पूर्वी दरवाजे के पास है। उसपर के शिला-लेखों और मूर्तियों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि पहले वह जैन-मन्दिर था। महालक्ष्मी के इस मन्दिर के बारे में भी कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यहांपर असल में जैनियों की देवी पद्मावती का मन्दिर था, जिसे जैन-राजाओं ने दक्षिणी ढंग पर बनवाया था। आगे चलकर इस प्रदेश पर जब हिन्दुओं का राज हुआ तो उन्होंने उसी स्थान पर महालक्ष्मी की स्थापना करके इसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिन्दू-मन्दिर बनाया, इसके प्रमाण के रूप में वे मन्दिर की दीवारों पर खोदी गई जैन-मूर्तियों का उल्लेख करते हैं।

पांच मील तक सुनाई देनेवाली घंटी

श्री महालक्ष्मी के देवालय का उत्तरी दरवाजा

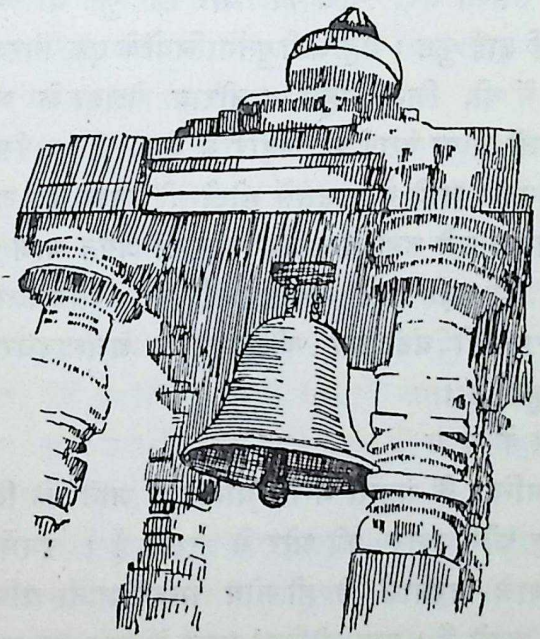

चार-पांच मील तक सुनाई देनेवाली घंटी

'घंटी दरवाजा' कहलाता है। यहांपर जो घंटी है, वह इतनी बड़ी है कि उसकी आवाज सुबह और रात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

के शांत समय में चार-पांच मील तक सुनाई देती है। कोल्हापुर के छत्रपति स्वर्गीय शाहू महाराज जब सन १९०१ ईसवी में यूरोप के दौरे पर गये थे तब वहां से ख़ास महालक्ष्मी के लिए वह यह घंटी लाये थे।

उससे पहले यहां जो घंटी थी, वह भी बहुत बड़ी थी। उसका घेरा नीचे की ओर छः फुट था और ऊंचाई ढाई फुट। यह घंटी पुर्तगालियों के एक गिरजा-घर में थी, जिसे पहले बाजीराव पेशवा के भाई चिमाजी अप्पा वसई की लड़ाई में सन १७३९ ईसवी में जीतकर लाये थे। उसमें छोटी-सी दरार पड़ जाने के कारण उसे वहां से हटाकर उसकी जगह आज की उससे भी बड़ी घंटी लगाई गई थी। पुर्तगालियों-वाली पुरानी घंटी अब कोल्हापुर के अजायबघर में रखी हुई है।

मन्दिर के मंडप

मन्दिर के अहाते में से मन्दिर में जाने के लिए दक्षिण और उत्तर की ओर से रास्ते हैं। इनमें से उत्तरवाले दरवाज़े से ही लोग अन्दर जाना अधिक पसन्द करते हैं। कुछ सीढ़ियां चढ़ने के बाद हम मुख्य या मुखमंडप में प्रवेश करते हैं। यहांपर भरत-शत्रुघ्न की मूर्तियां हैं, जिनके बारे में यह कहा जाता है कि ये जैन-मन्दिरों में रहनेवाले द्वारपालों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मूर्तियां हैं। इस मंडप में हर तरफ़ पत्थर के खंभे-ही-खंभे हैं, जिनकी तादाद अड़सठ है। मंडप के बीचों-बीच जो दालान है, उसके चार कोनों में मुरलीधर, वीरभद्र, विष्णु और वासुदेव की चार मूर्तियां हैं। मुखमंडप के पश्चिम में चौंतीस खंभोंवाला मुक्ति-मंडप है, जिसमें गणेशजी विराजमान हैं।

इस मंडप में से आगे बढ़ने पर मणि-मंडप या अर्धमंडप आता है! इस मंडप में से अन्दर जाने के दरवाजे के दोनों ओर जय-विजय की बड़ी-बड़ी मूर्तियां हैं। ये मूर्तियां लगभग सोलह फुट ऊंची हैं। हाथों में हथियार लेकर अपने शरीर को तीन जगह टेढ़ा करके (त्रिभंगी ढंग से) ये द्वारपाल खड़े हैं। इनकी शिल्पकला ऊंचे दर्जे की मानी गई है। दंतकथा है कि महालक्ष्मी का यह देवालय दैत्यों ने एक ही रात में खड़ा किया था और उसकी रक्षा के लिए ये दो दैत्य यहां अनादि काल से खड़े हैं।

मणि-मंडप से अन्दर जाने पर सामने ही एक दरवाजा दिखाई देता है, जिसपर चांदी का पत्तर चढ़ा हुआ है। इसके अन्दर प्रायः पुजारी ही जाते हैं। बाहर से आनेवाले दर्शकों को इसी दरवाजे में से माता महालक्ष्मी के दर्शन करने होते हैं। इस दरवाजे तक सब कोई जा सकते हैं—वे हरिजन हों या दूसरे कोई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

इस मन्दिर में बहुत बरस पहले ही हरिजनों को प्रवेश मिल गया है।

देवी की परिक्रमा का मार्ग भी यहींपर है। पुराने जमाने में जब बिजली की बत्तियां मन्दिर में नहीं आई थीं, परिक्रमा का ज्यादातर मार्ग अंधेरे से भरा होता था, जिसमें जाते हुए डर लगता था। पर अब बिजली के आ जाने से परिक्रमा करना बहुत आसान हो गया है।

महालक्ष्मी की सुन्दर मूर्ति

आदिमाया महालक्ष्मी की काले पत्थर की सुन्दर मूर्ति देखकर दर्शक का मन प्रसन्न हो जाता है। यह मूर्ति तीन फुट ऊंचे आसन पर खड़ी है। वह लगभग चार फुट ऊंची है। उसके चार हाथों में से दाहिनी ओर के आगे बढ़े हुए हाथ में मातुलुंग नाम का फल है, जो नीबू की तरह का नारियल जितना बड़ा खुर-दरा और खट्टा फल होता है। पीछे के हाथ में उसने नीचे रक्खी हुई गदा पकड़ी है। बाईं ओर के आगे बढ़े हुए हाथ में (पानी) पीने का बर्तन और ऊपरवाले हाथ में ढाल है। देवी के सिर पर मुकुट और उसपर योनि-सहित लिंग है। मूर्ति के पीछे सिंह और नाग की तरह का प्रभा-वलय है। मूर्ति का मुख प्रसन्न और साथ ही गंभीर है, मानो संसार की चिंता का बोझ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वह हँसते हुए अपने सरि पर उठाये हुए हैं। इस मूर्ति का निचला बायां हाथ सन १९१७ ईसवी में अभिषेक का लोटा उसपर गिर जाने से टूट गया था। उसे सन १९५५ में जोड़ दिया गया और समूची मूर्ति को वज्रलेप किया गया, जिससे वह कभी न टूटने पाये।

महालक्ष्मी (खुली मूर्ति)

यहांपर यह याद रखना चाहिए कि कोल्हापुर की यह महालक्ष्मी न तो विष्णु भगवान् की पत्नी लक्ष्मी ही है और न शिवजी की पार्वती ही। वह तो आदिमाया, आदि-माता है, जो संसार की उत्पत्ति का कारण बनी हुई है। इसी आदिमाता ने श्री विष्णु को महा-लक्ष्मी, शिवजी को महाकाली और ब्रह्मा को

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

महासरस्वती दे दीं, जो कि उसीकी अपनी शक्तियां थीं, यानी इस आदिमाता में सारे देवी-देवता आ जाते हैं। वह जगदंबा है, जगज्जननी है।

जब सोलहवीं सदी में इस प्रदेश पर मुसलमानों का हमला हुआ तो पुजारियों ने इस मूर्ति को उठाकर पास ही के कपिलतीर्थ नाम के तालाब में छिपा दिया। बाद में उसे वहीं के तुलजाभवानी मन्दिर में रक्खा और जब यहां मराठों का राज कायम हुआ तो उसे सन १७२२ ईसवी में फिर से इस मन्दिर में ला रक्खा गया। आज भी जब शंकराचार्य या ऐसे ही जानकार शास्त्री पंडित कोल्हापुर जाते हैं तो वे पहले कपिल-तीर्थ वाले मन्दिर में जाकर बाद में महालक्ष्मी का दर्शन करने जाते हैं।

इस मन्दिर में नवरात्रि के दिनों में बड़ा उत्सव मनाया जाता है। तब हर रोज देवी की अलग-अलग ढंग से पूजा की जाती है। कभी वह खिले कमल में खड़ी कमला होती है तो कभी सिंह पर सवार हो जाती है। कभी वह मोर पर सवार होकर सरस्वती बन जाती है तो कभी गरुड़ पर बैठकर लक्ष्मी बन जाती है। इन दिनों दर्शन करनेवालों की भीड़ दिन-रात लगी रहती है। वैसे आम तौर पर मंगल और शुक्र के दिन भी अम्बाजी के दर्शन के लिए बहुत लोग मन्दिर जाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

हैं, जिनमें महिलाएं ही अधिक होती हैं।

सुबह पांच बजे देवी की आरती की जाती है। उसके बाद पूजा होती है। दोपहर को फिर आरती और महानैवेद्य (महाभोग) होता है। तीसरे पहर अलंकार, पूजा, शाम को धूप-आरती और रात को आखिरी आरती की जाती है। महालक्ष्मी की दाहिनी ओर महाकाली और बाईं ओर महासरस्वती के छोटे-छोटे मन्दिर हैं।

महाकाली के मन्दिर के पास ही श्रीयंत्र है। एक चिकने काले पत्थर पर भूमिति-गणित की आकृति की तरह दिखाई देनेवाले इस शाक्तपंथी यंत्र में गूढ़ अक्षर खोदे गए हैं। इसके बारे में यह कहा जाता है कि उससे ऐश्वर्य तो मिलता ही है, साथ ही उससे बीमारियां भी चली जाती हैं।

इस यंत्र के पीछे से मन्दिर के ऊपरी हिस्से पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। ऊपर के हिस्से में, ठीक महालक्ष्मी के सिर पर, शिवजी का मन्दिर है। उसमें महादेव की पिंडी है और सामने नन्दी है। इसी मन्दिर के ऊपर देवालय का नया बड़ा शिखर है। पहले यहां दक्षिण भारतीय ढंग का गोपुर था। पर मंदिर के बढ़ जाने पर वह छोटा मालूम होने लगा, इसलिए यह नया शिखर बनवाया गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

सूर्य-किरणों का मन्दिर में प्रवेश

महालक्ष्मी का यह मन्दिर इतना बड़ा है कि इसके अन्दर सूरज की किरणें पहुंच नहीं सकतीं। इसलिए दिन में भी उसमें अंधेरा रहता है। मगर मन्दिर बनानेवालों ने एक खूबी उसमें रक्खी है। साल में जब सूरज ठीक पूरब में निकलकर पश्चिम में डूबता है तो उस दिन शाम को न जाने कहां से सूरज की किरणें सीधे महालक्ष्मी के मुख पर आकर पड़ती हैं और उसे चमका देती हैं। माघ महीने के शुक्ल पक्ष में तीन दिन तक सूर्यास्त के समय सूरज की किरणें अम्बाजी के मुख पर पड़ती हैं और देवी के चरण छूकर सूरज भगवान् डूब जाते हैं। इस अवसर पर कई भक्त महालक्ष्मी की आरती करते हैं।

कुछ लोक-कथाएं

कोल्हापुर को 'दक्षिण काशी' क्यों कहा जाने लगा, इस बारे में वहां के लोगों में कुछ कथाएं प्रचलित हैं। उनमें से एक-दो हम यहां देते हैं।

एक बार सब देवताओं ने यह निश्चित किया कि अपनी एक सभा कोल्हापुर में की जाय। उस सभा में सम्मिलित होने के लिए भगवान् शिवजी माता पार्वती को साथ लेकर कैलास से निकले। सुबह होने से पहले उन्हें कोल्हापुर पहुंच जाना था। पर बीच में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ही शिवजी को गांजे का दम लगाने की इच्छा हुई। अभी काफी रात बाकी थी और शिवजी कोल्हापुर से तीन मील इधर वडणगे गांव तक पहुंच गये थे। इसलिए उन्होंने सोचा कि एक कश लगाने में क्या हर्ज है ? पर वहां आग कहां से आती ? इसलिए शिवजी गांव के अन्दर आग लाने चले गए और पार्वतीजी गांव के बाहर उनकी राह देखती रहीं।

शंकरजी ने गांव में जाकर आग ले ली और वह गांजे का दम लगाने लगे तो उसमें ऐसे मस्त हो गये कि उनकी सारी सुधबुध खो गई। उन्हें समय का कोई ध्यान ही न रहा। इतने में मुर्गे ने बांग देकर बताया कि चलो, उठो, सबेरा हो गया। सुबह हो जाने पर देवता लोग चलने-फिरने लगें तो आदमी उन्हें देख लेंगे, इसलिए वे रात को ही चलते हैं।

इस तरह सुबह हो जाने पर शिवजी वडणगे गांव में ही रह गये और पार्वती गांव के बाहर। अगर शिवजी उस दिन कोल्हापुर पहुंच जाते तो कोल्हापुर ही असली काशी बन जाती। फिर भी शिवजी इतने पास पहुंच गये थे, इसलिए कोल्हापुर दक्षिण की काशी कहलाया।

दूसरी लोक-कथा इस तरह है :

एक बार काशी के विश्वेश्वर बाबा और कोल्हा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पुर की महालक्ष्मी में इस बात पर विवाद छिड़ गया कि उनमें से बड़ा क्षेत्र कौन-सा है। जब उनमें समझौता न हो सका तो वे भगवान् विष्णु के पास जा पहुंचे। भगवान् विष्णु ने एक बड़ी तराजू ली और उसके एक पलड़े में काशी को रखकर दूसरे पलड़े में कोल्हापुर को रक्खा। जब तराजू को ऊपर उठाया गया तो कोल्हापुरवाला पलड़ा भारी पाया गया। जब शिवजी ने यह देखा तो वह काशी छोड़कर कोल्हापुर में आ बसे। तबसे कोल्हापुर को दक्षिण की काशी कहा जाने लगा।

ये तो लोक-कथाएं हैं। इनका मतलब इतना ही है कि जो लोग दूरी की वजह से काशी तक नहीं पहुंच सकते थे, उन्होंने अपने मन को बहलाने के लिए यह सोच लिया कि कोल्हापुर ही काशी है और भगवान् विष्णु काशी में शिवजी के रूप में रहते हैं तो कोल्हापुर में शक्ति या महालक्ष्मी के रूप में। इससे तो यही सिद्ध होता है कि काशी के प्रति आम लोगों में कितनी गहरी श्रद्धा है।

त्र्यंबुली का मन्दिर

इस महालक्ष्मी के बाद सबसे अधिक महत्व का मन्दिर त्र्यंबुली का है, जिसे आम लोग टेंबलाई कहते हैं। कोल्हापुर से डेढ़ मील पूरब में एक छोटी-सी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पहाड़ी पर इस त्र्यंबुली देवी का मन्दिर है। यहां की प्राकृतिक शोभा बड़ी ही मनोहर है।

इस देवी के बारे में भी कुछ लोक-कथाएं हैं।

एक कथा है कि त्र्यंबुली महालक्ष्मी की छोटी बहन है और उसने कोलासुर को मारने में अपनी बड़ी बहन की काफी मदद की थी। पर किसी अवसर पर महालक्ष्मी से उसका कुछ अपमान या अनादर हुआ, इसलिए वह रूठकर शहर से दूर जा बैठी। तब महालक्ष्मी ने उसके पास जाकर समझाया कि उसने जो कुछ किया था, उसमें त्र्यंबुली का अपमान करने का उसका इरादा नहीं था। फिर भी त्र्यंबुली वहीं रही। इसपर महालक्ष्मी ने उससे कहा कि नवरात्रि के दिनों में आश्विन सुदी पंचमी के दिन वह स्वयं छोटी बहन से मिलने शहर के बाहर जायगी। तब जाकर त्र्यंबुली देवी का क्रोध ठण्डा पड़ा।

नवरात्रि के दिनों में त्र्यंबुली के मन्दिर में भी बड़ा उत्सव रहता है और पंचमी के दिन महालक्ष्मी त्र्यंबुली से मिलने जाती है। उसकी पालकी के साथ कोल्हापुर के महाराजा भी वहांतक अपने दलबल के साथ पैदल जाते हैं।

दूसरी एक कहानी यों है। भार्गव और विशालाक्षी ने अपनी बेटी को महालक्ष्मी की सेवा के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

समर्पित किया था। महालक्ष्मी ने उसकी नियुक्ति मल्याल तीर्थ की रखवाली के लिए कर दी थी, जिसमें सोने के कमल खिलते थे। एक बार पाताल के राक्षसों ने आकर वे कमल चुरा लिये तो महालक्ष्मी की इस दासी ने उस तालाब में तीन बार डुबकी लगाकर राक्षसों का नाश किया और चुराये गए कमल वह वापस ले आई। इसपर महालक्ष्मी ने खुश होकर उस दासी को देवी बना दिया और उसके लिए अलग मन्दिर बनवाकर उसका नाम त्र्यंबुली रक्खा।

एक और लोककथा इस प्रकार है—

कोलासुर के नाश के बाद उसका और एक बेटा कामाक्ष क्रुद्ध होकर दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य के पास चला गया और उनसे उसने महालक्ष्मी से बदला लेने का उपाय पूछा। शुक्राचार्य ने उसे एक जादू का डंडा दिया, जिसे दाहिनी ओर से बाईं ओर घुमाने पर देवता या मनुष्य भेड़ बन जाते थे और बाईं ओर से दाहिनी ओर घुमाने पर भेड़ बने हुए देवता या आदमी फिर से देवता या आदमी बन जाते थे।

यह डंडा लेकर कामाक्ष कोल्हापुर चला गया और उसके बल पर उसने महालक्ष्मी के साथ वहां के सब देवताओं और आदमियों को भेड़ बना दिया। पर उसे त्र्यंबुली का पता नहीं था। जब त्र्यंबुली को इस घटना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

की खबर मिली तो वह एक ग़रीब बुढ़िया का रूप धरकर शहर में पहुंची। उसके पास एक बड़ा टोकरा था, जिसमें नीचे तो बहुत भारी पत्थर भरे हुए थे और ऊपर उपले थे। वह टोकरा ज़मीन पर रखकर वह कामाक्ष की राह देखने लगी। जब कामाक्ष वहां से गुजरा तो त्र्यंबुली ने उससे प्रार्थना की कि वह उस टोकरे को उठाने में उसकी मदद करे। जब कामाक्ष ने वह टोकरी उठाई तो झट-से त्र्यंबुली ने वह कामाक्ष के सिर पर दे मारी, जिससे वह तुरन्त मर गया। तब त्र्यंबुली ने उसका जादू का डंडा बाईं तरफ से दाहिनी तरफ़ घुमाकर सारे देवताओं को फिर से देवता और मनुष्यों को मनुष्य बना दिया।

दूसरे मन्दिर

ऊपर के दो मन्दिरों के अलावा और भी बहुत सारे मन्दिर इस दक्षिण काशी में मौजूद हैं। उनमें से पद्मालय तीर्थ के पास का विट्ठल मन्दिर श्री महालक्ष्मी के मन्दिर के जितना ही पुराना है। उसके अन्दर पांच दूसरे मन्दिर और एक बड़ी धर्मशाला है। मन्दिर का महाद्वार ऊंचा और आलीशान है।

कोल्हापुर के दक्षिण में पांच मील पर बार्लिंगे गाँव के पास एक पहाड़ी पर देवी कात्यायनी का मंदिर भी बहुत मशहूर है। 'करवीर माहात्म्य' में कहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

गया है कि इस कात्यायनी ने कोलासुर के वध में महालक्ष्मी की बड़ी मदद की थी।

कोल्हापुर से नौ मील की दूरी पर एक पहाड़ पर ज्योतिबा नाम के एक भैरव का बड़ा मन्दिर है। हिमालय में जो केदार लिंग या केदारेश्वर है, उसीका एक उपलिंग यहां ज्योतिबा के रूप में है, ऐसा माना जाता है। ग्वालियर के महाराजा शिंदेजी का यह कुलदैवत है। यहांपर चैत्र की पूर्णिमा के दिन बड़ा भारी मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से हज़ारों-लाखों यात्री आते हैं। कहते हैं, महालक्ष्मी ने इसी पहाड़ पर कोलासुर को मार डाला और जिस रुद्र की मदद से उस राक्षस को मारा था, उसे इस पहाड़ पर रख-कर करवीर-क्षेत्र की रक्षा करने का काम उसे सौंप दिया। इस रुद्र को ही लोग ज्योतिबा कहने लगे।

कोल्हापुर के तालाब और घाट

कोल्हापुर के मन्दिरों की तरह वहां के तालाब और घाट भी प्रसिद्ध हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, यह शहर निचाई में बसा हुआ है, इसलिए यहाँ तीर्थों और तालाबों की कोई कमी नहीं है। इनमें से कुछ तालाब अब पाट दिये गए हैं। उनमें कपिलतीर्थ और पद्मालय (अर्थात् कमलों का सरोवर) प्रमुख हैं। आज वहांपर तालाबों का नामोनिशान भी नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

रहा है।

शहर से सटा हुआ रंकाला (रंकालय) तालाब हवाखोरी की एक बढ़िया जगह है। महालक्ष्मी का एक सेवक रंक नामक भैरव था, उसीका नाम इस तालाब को मिला। लोककथा है कि रंक का सोने का मन्दिर इस तालाब के अन्दर है। असल में वहां एक बड़ा-सा गढ़ा था, जिसमें से पत्थर निकाले जाते थे। बाद में आठवीं सदी में वहां भूकंप आ जाने से इतना बड़ा तालाब बन गया। सन् १८८३ ईसवी में उसे और बढ़ाया गया और उससे पचीस साल बाद ढाई लाख रुपये खर्च करके उससे बड़ी दीवार बनाई गई। इसके पश्चिम में शालिनी पैलेस नाम की एक नई और शानदार इमारत है, जिसकी छाया तालाब में बड़ी भली मालूम होती है। तालाब के अन्दर 'सन्ध्या मठ' नाम की एक पुरानी छोटी-सी पत्थर की इमारत है। शायद वहांपर ब्राह्मण लोग सुबह-शाम सन्ध्या करते रहे हों।

इस तालाब के पास पूरब की तरफ़ एक बड़ा-सा नंदी है। इसके बारे में यह कहा जाता है कि वह हर साल एक गेहूं आगे बढ़ता है और एक तिल पीछे हटता है। कुछ लोगों की यह श्रद्धा या धारणा है कि जब इस गति से यह नंदी रंकाला तालाब में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जा गिरेगा, उसी समय इस दुनिया में प्रलय हो जायगा।

रंकाला तालाब का घेरा लगभग तीन मील है और उसकी गहराई पैंतीस फुट है। तैरनेवालों के लिए यह एक बड़ा आकर्षण है।

कोल्हापुर से तीन मील दूर कलंबा नाम का तालाब है, जिसमें से सन १८८१ इसवी से शहर को पानी मिल रहा है।

कोल्हापुर जिस पंचगंगा नदी के किनारे बसा हुआ है, उसका घाट भी देखने योग्य है। कोल्हापुर के चित्रकारों के लिए यह बड़े महत्व का स्थान है, क्योंकि यहां की प्राकृतिक शोभा दिल को मोह लेनेवाली है।

नदी के किनारे पर उत्तरेश्वर का पुराना मंदिर है। उसमें शिवजी का जो लिंग है, उसकी पिंडी लगभग छः फुट ऊंची है। न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानडे इस बस्ती में कुछ दिन रहे थे और उन्होंने इस मन्दिर की पूजा के लिए कुछ पैसा भी छोड़ रक्खा है।

इस तरह दक्षिण की काशी मन्दिरों से भरी हुई है। मन्दिरों के अलावा यहां की और भी कुछ चीजें मशहूर हैं। यहां के पहलवान सारे भारत में जाने-माने हैं। यहां के स्टूडियों के कारण फिल्मो दुनिया में भी कोल्हापुर का नाम मशहूर है। छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज यहां राज करते थे और आज भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उनकी पूजा में शिवाजी महाराज के हाथ का पंजा रक्खा हुआ है। इस पंजे का इतिहास इस प्रकार है :

जब शिवाजी महाराज ने मालवण के पास 'सिन्धु दुर्ग' नाम का किला बनवाना शुरू किया था तो वह बीच-बीच में उसका काम देखने जाते थे। एक बार जब वह वहां गये तो किले के बड़े बुर्ज का काम चल रहा था। बुर्ज पर चढ़ते समय महाराज ने योंही एक जगह हाथ रक्खा तो वहां के गीले चूने में उनके पंजे के निशान हो गये। बाद में जब वह चूना सूख गया तो वहां धातु का रस डालकर महाराज की यादगार के तौर पर एक पंजा बनवा लिया गया। आगे चलकर वह पंजा टूट गया, तब श्री शाहू महाराज ने उसीकी मदद से चांदी का पंजा बनवा लिया।

यहां का पुराना राजवाड़ा (राजमहल) देखने लायक है, जो श्री महालक्ष्मी के मन्दिर के पास ही है। इसका नक्कारखाना पांचमंज़िला है। इसपर चढ़ने से सारा शहर साफ़ दिखाई देता है। इसके दीवानखाने के खंभे इतने चिकने हैं कि उनमें हम अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं।

इस तरह की कई चीज़ें इस शहर में देखने को मिलती हैं। आज के दौड़-धूप के ज़माने में भी कोल्हापुर के कारीगर अपनी कारीगरी के नमूने पेश करके देखने-वालों को चकित कर देते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

यहां के राजाओं ने शिक्षा और सुधार के बहुत-से काम किये हैं, जिनका असर सारे महाराष्ट्र पर पड़ा है। महादेव गोविन्द रानडे और गोपालकृष्ण गोखले जैसे महान् नेताओं को प्रारम्भिक शिक्षा देने का श्रेय इसी दक्षिण काशी कोल्हापुर को है। आज यह शहर पुराने और नये संस्कारों का संगम बना हुआ है। विज्ञान के इस युग में भी श्री महालक्ष्मी के भक्तों की संख्या घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है।

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समाज-विकास-माला

का

आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा यात्रा-साहित्य

१. बदरीनाथ (मा० सं० १)
२. गंगाजी (८)
३. द्वारका (१७)
४. कावेरी (३५)
५. तीर्थराज प्रयाग (३६)
६. कैलास-मानसरोवर (४०)
७. पंढरपुर (४३)
८. रामेश्वरम् (५१)
९. कालापानी (५७)
१०. हरिद्वार (८२)
११. नासिक (९३)
१२. पाटलिपुत्र (९८)
१३. गोदावरी (१०२)
१४. नर्मदा (१०४)
१५. अमरनाथ (१०६)
१६. कोणार्क (१०९)
१७. जगन्नाथपुरी (११५)
१८. गुरुवायूर (११६)
१९. यमुना की कहानी (१२९)
२०. लाल किला (१३२)
२१. एवरेस्ट की कहानी (१३८)
२२. गोलकुण्डा का किला (१४४)
२३. अजन्ता-एलोरा (१४६)
२४. हमारा हिमालय (१४७)
२५. गोमुख (१४९)
२६. दक्षिण की काशी (१५५)
२७. फाहियान की भारत-यात्रा (१५६)
२८. चम्बल की कहानी (१
२९. पुष्कर (१६२)

मूल्य प्रत्येक पुस्तक का ४० नये पैसे।

इस माला में विविध विषयों की १६३ पुस्तकें निकल चुकी

१५५

४० नये पैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu